ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue - 9 | June - 2016
Review Of Research

दलित जातियों की राजनैतिक भागीदारी की प्रकिया का समीक्षात्मक अध्ययन (उ. प्र. के अम्बेड़कर नगर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

सुरेन्द्र कुमार [1] , डॉ.कान्ता अलावा[2]
1 शोधार्थी पी. एचडी., लोक विकास एंव अनुसंधान केन्द्र स्नेहलतागंज इन्दौर सम्बद्ध देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर म. प्र. भारत.
2 प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, षहीद भीमा नायक शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय बडवानी म.प्र. भारत.

प्रस्तावना :–

सामाजिक समानता के विना किसी भी कार्य को पूर्ण नहीं किया जा सकमा है। भारत एक ऐसा देष है जहॉ पर अनेक प्रकार के लोग निवास करते हैं। फिर भी ये लोग आपस में भाई चारा बना कर रहते चले आ रहे हैं। अपितु हाल के वर्षो में क्षेत्रवाद, जातिवाद, वर्षवाद, पार्टीवाद, धर्मवाद, सामप्रदायवाद आदि जैसे राजनैतिक मुद्दों को कुछ अधिक महत्व दिया जाने लगा है। इस **वाद** की राजनीति में एक नये सामाजिक व राजनैतिक मुद्दे की ब्यूउत्पति हुई है जिसे दलित जातियों की राजनैतिक भागीदारी के रूप में एक अलग पहचान बनायी है।

इन दलित जातियों की राजनैतिक भागीदारी के इतिहास के बारे में जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें यह प्राप्त होता है कि उपरोक्त विषय में संत रविदास, संत कबीर आदि अनेक ऐसे समाज सुधारक व क्रान्तिकारी बिरसामुन्डा, टानटया भील मामा उधम सिंह, झलकारीवाई आदि ऐसे लोग हुऐ हैं जो सामाजिक समानता की बात करते रहे हैं अपितु कलान्तर में फूले, साहू जी, पेरियार, गाडगे आधुनिक समय में डा0 अम्बेडकर एंव कांषीराम जैसे राजनेताओं के द्वारा किये गये कार्यों से दलित राजनीति में क्रान्तिकारी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। वर्तमान समय में लगभग सभी राजनैतिक पार्टीयाँ दलित जातियों को अपनी तरफ लुभानें में लगी हुई हैं। कहने के लिए दलित हितैषी सभी लोग अपने आप को बताते रहे हैं चाहे कांग्रेस, भाजपा, बसपा व अन्य क्षेत्रीय पार्टीयाँ हों। किन्तु आज भी दलित जाति के लोग अपने आप को ठोस राजनैतिक आधार की तलास करते नजर आ रहे हैं कि उनके सच्चे रहनुमा की राजनैतिक पार्टी कौन सी है। इस तथ्य का अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि कभी दलित जातियाँ काग्रेस के पक्ष में तो कभी भाजपा कभी बसपा व सपा जैसे अन्य क्षेत्रिय दलों के पक्ष में मतदान करते रहे हैं। पहले की अपेक्षा आज दलित जातियों में राजनैतिक जागरूकता व मतदान के प्रति अभिमुख हुए हैं। इस अभिमुखिकरण के प्रति जो ध्रुवीकरण क्षेत्रिय स्तर पर बना है। वही इस ध्रुवीकरण का प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर नहीं हो पा रहा है। क्यों कि इन दलित जातियों की आर्थिक पृष्ठभूमि कमजोर होने की वजह से मतदान की प्रकिया में लोग थोड़े से लालच में आ कर ये लोग द्रवित होकर मतदान कर देते हैं। किन्तु वही इन दलित जातियों की उपजाति में जाटव, चमार जाति के लोगों का ध्रुर्वीकरण बना हुआ है। ये लोग डॉ. अम्बेडकर व तथागत् गौतम बुद्व को अपना आर्दष मान रहें है। अधिकासंत: ये राजनीतिक ध्रुवीकरण की प्रक्रिया दलित जातियों की सभी उपजातियों में सूक्ष्म मात्रा में दिखयी देती है अपेक्षाकृत जाटव चमार आदिकी अपेक्षा ।

उद्धदेश्य :– दलित जातियों की राजनीतिक भागीदारी एंव इन लोगों के मतदान व्यपहार की प्रक्रिया की जागयकता के मार्ग में उत्पन्न बाधांओ की जानकारी प्राप्त करते हुए। विभिन्न पार्टी के प्रति इन जातियों के लगाव का आंकलन करना अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य है।

समस्या :– दलित जातियों की सबसे बड़ी समस्या यह है कि निर्वाचन के समय यह ज्ञात नहीं हो पाता कि दलित जातियों का राजनीतिकरण हुआ है कि राजनीति का दलितीकरण इन जाति के लोगों की बेरोजगारी व अशिक्षा प्रमुख भी समस्या रही है।

शोध प्रविधि :– किसी भी शोध कार्य को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने के लिए सुसंगठित एवं क्रमबद्व ढ़ंग से सम्पन्न करने के लिये किसी मान्यता प्राप्त ऐसी शोध प्रविधि से होकर गुजरना होता है जो शोध विषय को मौलिकता एवं वैज्ञानिकता प्रदान कर सके। जो निम्नवत है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :– उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक दलित जाति के लोग पाये जाते हैं यह कथन 2011 की जनगणना के आधार पर सत्य है। अम्बेडकर नगर जिले का निमार्ण 1995 ई0 में फैजावाद जिले से अलग किया गया।

अध्ययन का निदर्शन :– प्रस्तुत शोध पत्र में तथ्यों के संकलन हेतु उद्देश्यपूर्ण–निदर्शन विधि के आधार से 325 उत्तरदाताओं का चयन इस प्रकार से किया गया है। कि जो सम्पूर्ण समग्र का प्रतिनिधित्व गया था। इस जिले में लगभाग 30 से 35 प्रतिषत दलित जाति के लोगों की जनसख्याँ निवास करती हैं। पायी जाती है। इस प्रकार से जिले की सभी 5 विधानसभा क्षेत्रों में निवास करने वाली दलित जनसख्याँ तक सीमित करके शोध पत्र को तैयार किया गया है।

अध्ययन का समग्र :– उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले के अंतर्गत आने वाली 5 विधान सभा क्षेत्रों में निवास करने वाली समस्त दलित जातियों के षिक्षित, अशिक्षित महिला तथा पुरूष अध्ययन के समग्र है।

अध्ययन की इकाई :– प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन की इकाई के रूप में दलित जातियों के महिला–पुरूष अध्ययन के इकाई है जो 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके हैं।
कर सके। इस निदर्शन के आकार तथा प्रकार को निम्नलिखित तालिका में विस्तार पूर्वक वर्णित किया गया है जो निम्नवत् है।

उत्तरदाताओं का विवरण

सख्यां	विधान सभा	उ./म. की जनसंख्या		शिक्षित	अशिक्षित	योग
1	कटेहरी	शहरी	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	05	10	**15**
		ग्रामीण	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	10	10	**20**
2	अकबरपुर	शहरी	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	05	10	**15**
		ग्रामीण	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	10	10	**20**
3	टाण्डा	शहरी	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	05	10	**15**
		ग्रामीण	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	10	10	**20**
4	जलालपुर	शहरी	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	05	10	**15**
		ग्रामीण	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	10	10	**20**
5	जहांगीरगंज	शहरी	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	05	10	**15**
		ग्रामीण	महिला	05	10	**15**
			पुरूष	10	10	**20**
कुल योग				**125**	**200**	**325**

आकड़े एकत्रित करने के स्त्रोत :–सामाजिक विज्ञान के अन्तर्गत किये जाने वाले शोध कार्य में आकड़े एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित दो प्रकार के स्रोत्र का प्रयोग किया गया है। जो निम्नवत है।

प्राथमिक स्त्रोत :– प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक सूचना स्त्रोतों के आधार पर आकड़े संकलित करने में साक्षात्कार, अवलोकन, अनुसूची तथा सहभागिता पूर्ण समूह चर्चा आदि का प्रयोग किया गया है।

द्वितीयक स्त्रोत :– उपरोक्त शोध पत्र में द्वितीयक स्त्रोत के अंतर्गत विभिन्न विद्ववानों के द्वारा लिखित ग्रंथ, सर्वेक्षण रिपोर्ट, संस्मरण, यात्रा वर्णन, पत्र डायरी, ऐतिहासिक प्रलेख, सरकारी आँकड़े एवं अन्य प्रकार के प्रकाशित, अप्रकाशित, रिकार्ड आदि सम्मिलित किया गया है।

तालिका क्र. 1
आपकी उपजाति का क्या नाम है ?

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पसवान, पासी	64	19.69
2.	चमार, जाटव	113	34-76
3.	धोबी, कनौजिया	47	14.46
4.	खटिक, सोनकर, मुसहर, धरिकार	18	5.53
5.	अन्य	83	25.53
	योग	N = 325	100.00

स्त्रोत :– प्राथमिक स्रोत्र (क्षेत्र सर्वेक्षण 2016)

तालिका क्र. 2
आप वर्तमान में किस राजनेता /राजनेत्री को प्रसंन्द करतें हैं ?

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	नरेन्द्र मोदी।	46	14.15
2.	राहुल गॉधी।	17	5.23
3.	अरबिन्द्र केजरीवाल।	23	7.07
4.	मुलायम सिंह यादव।	83	25.53
5.	मायावती।	99	30.46
6.	अन्य।	57	17.53
	कुल योग	N =325	100.00

स्त्रोत :– प्राथमिक स्रोत्र (अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण 2016)

तालिका क्र. 3
आप के मत से दलित राजनीति मजबूत न होना इनमें से सबसे अधिक प्रभावशाली कारक क्या हो सकता हैं?

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	धनबल, वाहुबल, षक्तिबल।	92	28.30
2.	साक्षरता की कमी।	24	7.36
3.	अत्यधिक निर्धनता।	156	48.00
4.	राजनीतिक चेतना का अभाव।	21	6.46
5.	जतिवाद, क्षेत्रवाद, पार्टीवाद, वंषपाद।	09	2.76
6.	राजनीतिक दलों के निर्णय–निर्माण संबंधी कार्यों में उनकी सहभागिता का अभाव।	19	5.04
7.	अन्य	03	920.

स्त्रोत :– प्राथमिक स्रोत्र (अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण 2016)

तालिका क्र. 4
दलित जातियों का सकिय रूप से सम्मलित न होने की प्रमुख बाधॉ क्या हो सकती हैं?

क्रमांक	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक स्थिति का कमजोर होंना।	142	43.69
2.	शैक्षणिक तथा सहयोगात्मक की भावना का ना होना।	63	25.53
3.	प्रभाव षाली दबाव समूह का न होना।	15	4.61
4.	राजनैतिक जागरूकता की भावना का कमजोर होना।	49	15.07
5.	अन्य	41	12.61
	कुल योग	N = 325	100.00

स्त्रोत :– प्राथमिक स्त्रोत (अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण 2016)

तालिका क्र 5

क्या आपके मत में आरक्षण की नीति से अनुसूचित जातियों के कल्याण में वृद्धि हुई है ?

क्र.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	256	78-76
2.	नहीं	69	21-23
	योग	N= 325	100.00

स्त्रोत :– प्राथमिक स्त्रोत (अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण 2016)

निष्कर्ष :–

अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान यह देखने को मिला है कि 113 अर्थात् 34.76 प्रतिशत लोगों का मानना है कि चुनाव में मतदान करना अपने अधिकारों की अभिव्यक्ति करना है। तालिका क्र. 2 के अनुसार जब मतदान के लिए प्रभावी कारक के बारे में मतदाताओं की राय ली गई तो सबसे अधिक मतदाता दलों की नीतियों से प्रभावित कारक के रूप में स्वीकार किया है जो कि, 46.15 प्रतिशत लोग हैं अभी तक अनुसूचित जनजातियों में सशक्त नेतृत्व विकसीत नहीं होने के प्रमुख कारण क्या हो सकते हैं तो निर्धनता को 48.00 लोगों ने तथा अशिक्षा को 28.30 लोगों ने बताया है। मतदान करने की जानकारी अधिकांशतः लोगों को रेडियो/टी.वी. तथा समाचार पत्रों सिनेमाघरों आदि से मिलती है जिसमें यह 43.69 लोगों को यह मानना है। जब मतदान व्यवहार व जनभागीदारी के प्रोत्साहन के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी तो 32.99 उत्तरदाता पंचायतों के माध्यम से सामाजिक बुराईयों को खत्म करने के लिये प्रभावी अभियान को स्वीकार किया है।

मतदान व्यवहार को जब आरक्षण तथा आरक्षण की प्रभावी नीतियों के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने के लिये मतदाताओं का मत जानने की कोशिश की गई तो 83.38 प्रतिशत मतदाताओं ने हाँ में जवाब दिया। उन लोगों का मानना था कि आरक्षण से जातियों के उत्थान में लाभ हुआ है परन्तु वहीं पर 12.61 प्रतिशत मतदाताओं ने नहीं में जवाब दिया है। उन लोगों का मानना है कि आरक्षण की उपेक्षा शैक्षणिक, आर्थिक तथा सामाजिक व रोजगार के क्षेत्रों में लोगों की मदद की जानी चाहिए। मतदान व्यवहार एक तरल पदार्थ की तरह है। जहाँ पर ये थोड़ी सी ढ़लान पाता है उसी तरफ अपने रूख को मोड़ देता है। यें व्यवहार ज्यादातर गरीब दलित आदिवासी मतदाताओं में पाया जाता है। इस प्रकार से यह देखा गया है कि जिस प्रकार से मतदाताओं में जागरूकता बढ़ती जा रही है उसी भावना में आज के आम मतदाता भी अपने लाभ को देखकर मतदान करने लगे हैं। अधिकांशतः मतदाता त्वरित लाभ चाहते हैं। किन्तु अन्य जातियों में ऐसी प्रवृत्ति कम मिलती है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों की अपेक्षा कम है। अध्ययन के दौरान यह मिला कि इन जातियों की स्थित कमजोर होनें की वज़ह से इन जातियों के वोट को आसानी से अपने समर्थन में किया जाता रहा है। इस प्रकार से आम मतदाता त्वरित लाभांस चाहता हैं नकि वादें तथा आस्वासन। अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान शोधकर्त्ता को यह देखने व सुनने को मिलें कि, अब हम तो मतदान कर दिये, काम करना सरकार का काम है। इससे यह दिखायी देता है कि, अभी तक इन जातियों में राजनैतिक जागरूकता का अभाव है।

क्यों कि इन दलित जातियों की आर्थिक पृष्ठभूमि कमजोर होने की वजह से मतदान की प्रकिया में लोग थोड़े से लालच में आ कर ये लोग द्रवित होकर मतदान कर देते हैं।

सुझाव :–

अनुसूचित जातियों में मतदान व्यवहार तथा भागीदारी का समीक्षात्मक अध्ययन विषय पर किया गया अध्ययन इन जातियों तथा क्षेत्र के बारे में महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में कार्य करेगा जो सरकार निर्वाचन आयोग, नीति, निर्माताओं, राजनीतिज्ञों के साथ ही साथ इन जातियों के विकास के साथ ही साथ क्षेत्र प्रदेश एवं देश के विकास में भी सहायक होगा। इस प्रकार से मतदान व्यवहार तथा राजनीतिक भागीदारी में आने वाली बाधाओं को प्रभावित करने वाले कारकों को दूर करके जातियों के विकास पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। जैसे कि, स्वस्थ्य, शिक्षा, रोजगार, के साथ ही साथ नशा मुक्ति की युक्ति को भी खोजना होगा। सामाजिक समानता के लिये इन लोगों के साथ सामाजिक न्याय को अपनाने की अति आवश्यकता है। इस प्रकार से उक्त विषय पर किया गया अध्ययन मील का पत्थर साबित होगा।

।। संदर्भ ।।

1. कोठारी, रजनी (2007) ''भारत में राजनीति कल और आज'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. शर्मा, शशि (2010) ''राजनीतिक समाजशास्त्र की रूपरेखा'' पी.एच.लरनिंग प्रा0 लि0, प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. पुष्पेन्द्र, (1999) ''दलित एसर्शन थ्रू इलेक्टोल पॉलिटिक्स'' इकोनॉमिक एण्ड पोलिटिकल विकली, प्रकाशन, अंक, सितम्बर 4–10।
4. अहमद, इम्तियाज तथा एन. सी सक्सेना, (1995) ''कास्ट लैण्ड एण्ड पोलिटिकल पावर इन यू0 पी0'' सम्पादित : के0 एल0 शर्मा,(1995) ''कास्ट एण्ड क्लास इन इण्डिया रावत प्रकाशन नई दिल्ली।
5. प्रसाद, माता (1995) ''दलित जातियो का दस्तावेज'' किताब घर प्रकाषन, नई दिल्ली।
6. काफ, आर0 एल0 ए0 (1963) ''दी डिजाईन ऑफ सोशल रिसर्च'' यूनिवर्सिट प्रकाशन, ऑफ शिकागो।
7. मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ (2009) ''सामाजिक अनुसंधान की विधियाँ '' विवके प्रकाशन, नई दिल्ली।

8. दास, अषोक (2015) ''दलित दसतक'' मासिक पत्रिका, सम्पादक, एक्सपोपिंट एण्ड मीडिया प्रा0 लि0, पष्चिमी विहार नई दिल्ली।
9. सिसौदिया, यतेन्द्र सिंह (1999) ''अनसुचित जनजातियों में उहापोह की स्थिति'' रावत प्रकाशन, जयपुर राजस्थान।
10. षर्मा, अष्विनी कुमार (2014) ''मतदाता जागरूकता अभियान और मध्यप्रदेष में उसका प्रभाव'' मध्यप्रदेष सामाजिक शोध समग्र सामाजिक शोध पत्रिका, लोक विकास एंव अनुसंधान टस्ट प्रकाशन अंक, 3 मार्च स्नेहलतागंज इन्दौर।
11. चन्द्रा के0 व सी0 परमार, (1997) ''पार्टीज़ स्टेटिजीज इन यू0 पी0, एसेम्बली इलेक्सन'' इकोनामिक एण्ड पोलिटकल वीकली ,अंक 1.7, फरवरी, प्रकाशन नई दिल्ली।
12. कुमार प्रदीप (1997) ''दलित्स एण्डद बी0एस0पी0 इन यू0पी0, इषूज़ एण्डचैलेन्जेज'' इकोनामिक एण्ड पोलिटकल वीकली ,अंक 3.9, अप्रैल, प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. पई, सुघा (1998) ''द बी0 एस0 पी0, इन यू0 पी0'' सेमिनार नं0 471 नवम्बर ।